असम सरकार के सांस्कृतिक कार्य विभाग और ट्रेंड एमएमएस द्वारा आयोजित 8वें रोंगाली कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल के संबोधन का प्रारूप

दिनांक : 21 जून 2024, शुक्रवार	समय : 7:00 PM	स्थान : खानापाड़ा वेटिनेरी ग्राउंड

- असम सरकार के माननीय मंत्री **श्री बिमल बोरा जी,**
- असम सरकार के प्रधान सचिव **श्री बी. कल्याण चक्रवर्ती जी,**
- असम पर्यटन विकास निगम लिमिटेड के प्रबंध निदेशक **श्री पद्मापानी बोरा जी,**
- मुख्य आयोजक **श्री श्याम कानू महन्त जी**,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण
- देवियों और सज्जनों,

नमस्कार !

असम की विविध कला और संस्कृति के बड़े उत्सव “रोंगाली” के आठवें संस्करण में आप सभी के बीच उपस्थित होकर मुझे बहुत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यहां बोड़ो, मिसिंग, कार्बी, डिमासा और असम के अन्य विभिन्न जनजाति और जनगोष्ठियों के विशाल समूह को एक साथ देखकर भी बहुत खुशी हो रही है।

मुझे बताया गया है कि इस उत्सव के अंतर्गत असम की विविध कला-संस्कृति के साथ-साथ कृषि और उद्यमशील उत्पादों की प्रदर्शनी तथा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है।

इतनी विविधता के साथ इस उत्सव का आयोजन करने और इसमें मुझे आमंत्रित करने के लिए मैं असम सरकार के सांस्कृतिक विभाग, सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था ‘ट्रेंड एमएमएस’ और लेखक एवं प्रसिद्ध उद्यमी श्री श्यामकानू महन्त को धन्यवाद देता हूं। साथ ही इस तीन दिवसीय कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

मुझे यह जानकर भी अति प्रसन्नता हुई कि इस कार्यक्रम में पहली बार रोंगाली म्यूजिक अवार्ड को भी जोड़ा गया है। इसके अलावा जाने-माने असमिया गायक श्री दीपेन बरुवा को इस मौके पर लाइफ टाइमअवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। मैं उन्हें इस पुरस्कार के लिए हार्दिक बधाई देता हूं। मैं बॉलीवुड गायक श्री दिव्या कुमार को भी इस कार्यक्रम में आने के लिए धन्यवाद देना चाहूंता हूं।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य असम की समृद्ध कला-संस्कृति, उद्यमशीलता, पर्यटन के प्रचार-प्रसार और स्थानीय प्रतिभाओं को बढ़ावा देना है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इसी दृष्टिकोण के साथ रोंगाली के पिछले सातों संस्करण का आयोजन किया गया और इससे उल्लेखनीय परिणाम प्राप्त हुए।

विविध रंगों वाला यह रोंगाली उत्सव अब असम की विभिन्न जाति-जनगोष्ठियों का साझा मंच बन गया है। इसने असम और अन्य राज्यों के लाखों और पर्यटकों को आकर्षित किया है। इसने असम की कई नई

प्रतिभावों को सामने लाने में योगदान दिया। इससे राज्य में पर्यटन और उद्यमिता को भी बढ़ावा मिला है।

देवियो और सज्जनो,

यह बहुत ही हर्ष की बात है कि 'रोंगाली' उत्सव के आठवें संस्करण में भी असम की कला, संस्कृति, त्योहार, पर्यटन क्षमता और कृषि एवं उद्यमशील उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए कई तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण के अनुरूप तथा असम के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्वा शर्मा के नेतृत्व में रोंगाली उत्सव 'वोकल फॉर लोकल' को बढ़ावा देने पर जोर देता है। महोत्सव में भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए एक मजबूत अभियान शुरू किया गया, जिससे कई लोगों को इसमें शामिल होने के लिए प्रेरणा मिली। इस कार्यक्रम में असम के उद्यमियों द्वारा उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों और सेवाओं की एक विविध श्रृंखला का प्रदर्शन करने के लिए कई स्टॉल लगाए गए हैं।

कला क्षेत्र के प्रतिभावान और महान विभूतियों को देखकर मन में नई ऊर्जा का संचार होता है। रोंगाली जैसे सांस्कृतिक उत्सव क्षेत्र की कला और संस्कृति को तो बढ़ावा देते ही हैं, साथ ही राष्ट्रीय एकता की भावना को भी और मजबूत बनाते हैं। इस तरह के सांस्कृतिक आयोजनों से देशवासियों को हमारी सम्पन्न तथा समृद्ध संस्कृति और विभिन्न क्षेत्रों की विशेषताओं को जानने और समझने का अवसर मिलता है।

देवियो और सज्जनो

प्राचीन काल से ही हमारी कला शैली उच्च स्तर की रही है। सिन्धु घाटी की सभ्यता के समय से ही नृत्य, संगीत, चित्रकारी, वास्तुकला जैसी अनेक कलाएँ भारत में विकसित थीं। भारतीय संस्कृति में अध्यात्म की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। सृष्टि की प्रत्येक रचना कला का अद्भुत उदाहरण है। नदी की लहर का मधुर संगीत होया मयूर का मनमोहक नृत्य, कोयल का गीत हो, मां की लोरी या नन्हे से बच्चे की बाल-लीला हो, हमारे चारों ओर कला की सुगंध फैली हुई है।

देवियो और सज्जनो

प्रौद्योगिकी का परम्पराओं से और विज्ञान का कला से मेल होना जरूरी है। आज का युग प्रौद्योगिकी का युग है। हर क्षेत्र में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की सहायता से नए- नए प्रयोग किये जा रहे हैं। कला और संस्कृति के क्षेत्र में भी टेक्नोलॉजी को अपनाया जा रहा है। इन्टरनेट के माध्यम से नए और युवा कलाकारों की प्रतिभा भी देश के कोने-कोने तक फैल रही है। हम नयी टेक्नोलॉजी का उपयोग करके देश की कला, परम्पराओं और संस्कृति का प्रसार व्यापक रूप से कर सकते हैं।

हम सब को अपनी संपन्न और समृद्ध संस्कृति पर गर्व होना चाहिए। साथ ही, हमें अपनी परम्पराओं में, नए विचारों और नई सोच को स्थान देना चाहिए, जिससे हम युवा पीढ़ी को भी इन परम्पराओं से जोड़ सकें। यह बहुत आवश्यक है कि हमारे युवा देश की अनमोल विरासत के महत्व को समझें।

देवियो और सज्जनो,

सच्चे कलाकारों का जीवन तपस्या का उदाहरण होता है। किसी भी काम को मेहनत और समर्पण के साथ कैसे किया जाता है, यह सीख हम कलाकारों से ले सकते हैं। ख़ास तौर पर हमारी युवा पीढ़ी को हमारे कलाकारों से बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

मैं समझता हूं कि ऐसे कार्यक्रम अधिक से अधिक संख्या में आयोजित की जानी चाहिए, जिससे युवाओं और अनुभवी कलाकारों के बीच विचारों और प्रतिभाओं का आदान-प्रदान हो सके।

आज के डिजिटल युग में हमें यह भी देखना होगा कि कैसे हम युवा पीढ़ी को निरंतर अभ्यास और मेहनत करने की प्रेरणा दे सकें। आज के लोगों का जीवन और समय बहुत तेज गति से भाग रहा है। इसलिए अपनी कला और संस्कृति की धरोहर को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाना आसान नहीं है।

यहाँ उपस्थित महान विभूतियों, विद्वानों, कला प्रेमियों, कलाकारों से मेरा आह्वान है कि आप सब मिलकर ऐसे उपाय और तकनीक निकालें, जिससे लोग, विशेषकर युवा अपने समय का सदुपयोग करें और कला-संस्कृति को समझने और सीखने के लिए प्रयास करें। मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी ज़रूर इस ओर ध्यान देंगे और राज्य के साथ-साथ राष्ट्र की सम्पन्नता और समृद्धि को और बढ़ाएंगे।

देवियो और सज्जनो

हम जानते हैं कि परिवर्तन जीवन का नियम है। कलाओं, परम्पराओं और संस्कृति में भी समय के साथ परिवर्तन आता है। कला शैली, रहन-सहन का ढंग, वेश-भूषा, खान-पान सब में समय के साथ बदलाव आना स्वाभाविक है, लेकिन कुछ बुनियादी मूल्य और सिद्धांत पीढ़ी दर पीढ़ी आगे चलते रहने चाहिए, तभी भारतीयता को हम जीवित रख सकते हैं।

'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना, शांति और अहिंसा, प्रकृति से प्रेम, सब जीवों के लिए दया, दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ना- ऐसे अनेक नैतिक मूल्य हैं, जो हम सब देशवासियों को एक सूत्र में बांधते हैं। आज भारत विश्व भर में अपनी नई पहचान बना चुका है जिसमें आधुनिक सोच को अपनाने के साथ-साथ परंपराओं और संस्कृति को सहेजने की क्षमता है।

मैं पुनः इस संस्कृतिक उत्सव के आयोजन के लिए बहुत-बहुत बधाई देता और इसकी सफलता के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद।

जय हिन्द।